

Najm al-Din Kubra

* तारीख खानदाने आलिया कुबराविया:-

जैसा कि पहले ये बयान हो चुका है कि इस सिलसिले आलिया की अस्ल हज़रत शैख नज्मउद्दीन कुबरा फिरदौसी रहमतुल्लाह अलैह से है! जो मुरीद और खलीफ़ा हज़रत अबु नजीब सोहरवर्दि रहमतुल्लाह अलैह के थे और जिन के हुक्म के मुताबिक़ आपने अपने बैअत का एक तअल्लुक हज़रत शैख अम्मार यासिर रहमतुल्लाह अलैह से भी क़ायम किया जो आपके पीर सोहबत थे!

* विलादत, नाम और कुन्नियत:-

आप रहमतुल्लाह अलैह इस आलमे खाक को अपने वजूदे नूर से ज़ियाबार करने सन् ५४० (540) हिजरी में तुर्कमानिस्तान के शहर ख़वारिज़्म के ख़्यूक नामी कस्बे में तशरीफ़ लाएं!

आपका पूरा नाम अहमद बिन उमर बिन मुहम्मद अल ख़वाफ़ी अल ख़्यूकी अल ख़वारिज़्मी है!

आप की कुन्नियत अबुल जनाब और लक़ब नज्मउद्दीन कुबरा और ताम्मतुल कुबरा है! आपको कुबरा इस वजह से कहा जाता है कि आप इल्मी मुनाज़रे में हमेशा ग़ालिब आते थे! आप शैख वली तराश से मशहूर व मारूफ़ थे!

* तालीमो तरबियत, मर्तबा व मक़ाम:-

आपने कई अकाबिर औलिया अल्लाह से तालीमों तरबियत हासिल किया है जैसे-

हज़रत शैख अब्दुल क़ादिर गिलानी, हज़रत ज़ियाउद्दीन अबुनजीब सोहरवर्दि, हज़रत अम्मार यासिर बदलिसी, हज़रत अबुल मआली फ़राज़ी, हज़रत शैख हाफ़िज़ अबुल आला, हज़रत इमाम अबु ताहिर मिस्री, हज़रत बाबा फ़ख़्र तबरेज़, हज़रत शैख रोज़बेहान

बकली सोहरवर्दि, हज़रत इस्माईल कसरी, हज़रत इब्राहीम कुर्दी
अलैह रहमतो रिज़वान !

मशहूर है कि एक रोज़ आप अपने इब्तेदाइ तालीमी दौर में इमाम बग़वी
हज़रत रोज़ बेहान बकली (मोहि-अल-सुन्नत) रहमतुल्लाह अलैह की
ख़ानकाह में उनके कुछ शागिर्दों के साथ उनकी तसनीफ़ "शरह सुन्नह"
पढ़ रहे थे! जब सबक़ इख़तेताम को पहुँचा तो ख़ानकाह में एक मज्ज़ूब
तशरीफ़ ले आए! उन मज्ज़ूब की निगाहें कीमिया असर जैसे ही हज़रत
नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह पर पड़ी आप की तबियत मुतग़ैर
हो गयी और जो सबक़ आपने पढ़ा था सब भूल भाल गए यहाँ तक कि
आपकी ज़बान सुन और ताक़त ए गुफ़्तगू सल्ब हो गयी! थोड़ी देर में
जब वोह दरवेश ख़ानकाह से रूख़सत हुए तो आपने लोगों से दरयाफ़्त
किया कि ये बुज़ुर्ग कौन थे? लोगों ने बताया कि ये मज्ज़ूब व महबूब
इलाही हज़रत बाबा फ़ख़्र तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह थे!
वोह रात आपकी बड़ी बेताबी से गुज़री! दूसरे दिन आप अपने उस्ताद
मोहतरम और चंद हम सबक़ हज़रात को लेकर हज़रत बाबा फ़ख़्र
तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह की
ज़ियारत को उनकी ख़ानकाह तशरीफ़ ले गए! अभी
मजलिस में आप बैठे थे कि बाबा फ़ख़्र तबरेज़ का
जिस्म फूलना शुरू हो गया और जिस्म का सारा कपड़ा फट गया!
थोड़ी देर बाद जब हज़रत फ़ख़्र तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह अपनी
असली हालत पर लौटें तो अपना वो कपड़ा हज़रत नज्मउद्दीन कुबरा
रहमतुल्लाह अलैह को अता किया और इरशाद फ़रमाया "कि ऐ
नज्मउद्दीन" अब तू अपना वक़्त दफ़्तर पढ़ने में ज़ाया न कर बल्कि
सिरे दफ़्तर ए आलम बन जा! बाबा फ़ख़्र तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह
का वोह लिबास जैसे ही हज़रत नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह
ने ज़ेब तन किया आपकी निगाह फ़र्श ता अर्श तमाम चीज़ों पर हावी
होने लगी और बातिन में अल्लाह के सिवा कुछ बाक़ी न रहा! दूसरे दिन
मदरसे में सबक़ पढ़ने बैठे थे कि
आँखों के सामने हज़रत फ़ख़्र तबरेज़ रहमतुल्लाह

अलैह का चेहरा नमूदार हुआ और इरशाद फ़रमाया "कि ऐ नज्मउद्दीन" कल तुम इल्मुल यक्कीन से गुज़र गये आज फिर ज़ाहिरी इल्म हासिल करने बैठ गये,, हज़रत शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह ने उसी वक़्त किताब पढ़ना छोड़ दिया! थोड़े दिनों बाद आप अपने अधूरे तसनीफ़ को मुकम्मल करने की गरज़ से बैठे हि थें कि बाबा फ़ख़्र तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह फिर सामने नज़र आएँ और कहने लगे "कि ऐ नज्मउद्दीन" शैतान ने तुम्हें फिर दूसरी तरफ़ लगा दिया; 'ख़बरदार उसके बहकावे में न आना'! हज़रत शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह ने उसी दिन काग़ज़ कलम को एक जानिब किया और ख़ुद को ख़ुदा से वाबस्ता कर लिया! आप मक़ामे फ़र्दानियत पर फ़ाएज़ अकाबिर औलिया अल्लाह से थें! वक़्त के तमाम औलिया व उलेमा आप को अपना पेशवा व सरदार तस्लीम करते थें! आप तमाम उलूम मरूजह व उलूम ज़ाहिरी बातिन में दस्तगाह कामिल रखते थे! आप अक्सर अहदियत में मुस्तगरक रहते थें! आप की ज़ुबाने मुबारक से जो दुआ निकलती वो मुस्तजाबुदावात होती थी!

* हुसूल ख़िरका-ख़लाफ़त:-

-: आपको हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर गिलानी रहमतुल्लाह अलैह से ख़लाफ़त व इजाज़ते क़ादिरया हासिल थी!

-: हज़रत शैख़ इस्माईल कसरी रहमतुल्लाह अलैह से तरीक़ कुमैलिया की ख़लाफ़त व इजाज़त हासिल थी!

-: हज़रत बाबा फ़ख़्र तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह ने भी अपना ख़िरका आपको अता किया था!

-: हज़रत शैख़ अबुनजीब सोहरवर्दि रहमतुल्लाह अलैह से सिलसिलाए सोहरवर्दिया की ख़लाफ़त व इजाज़त हासिल हुई!

-: हज़रत शैख अम्मार यासिर बदलिशी रहमतुल्लाह अलैह ने भी आपको खिरका व खलाफ़त सोहरवर्दिया से सरफ़राज़ फ़रमाया!

* आपके कश्फ़ो करामात:-

जैसा कि पहले ये बयान हो चुका है कि हज़रत नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह शैख वली तराश से मशहूर थे! वजह उसकी ये थी कि आप हालते वज्द में जिस किसी पर निगाह डालते उसे मर्तबा वलायत तक पहुँचा देते थे! मशहूर है कि एक दफ़ा एक सौदागर आप की खानकाह में हाज़िर हुआ आप उस वक़्त कैफ़ के आलम में थे, जोहि आपने अपनी निगाहे कीमिया असर उस सौदागर पर डाली उसे वलायत कुबरा पर फ़ाएज़ फ़रमा दिया! फिर उस सौदागर को कुतुब-अल-इरशाद बना कर उसके मुल्क रवाना किया!

इसी तरह एक रोज़ हालते वज्द में आप की नज़र एक कुत्ते पर पड़ी! कुत्ता बेखुद हो गया और शहर छोड़ कर बियाबान का रुख किया! उस दिन के बाद लोगों ने देखा कि उस शहर के तमाम कुत्ते उसके इर्द-गिर्द हल्ला कर के बाअदब बैठ जाया करते थे और अपना-अपना सर ज़मीन पर रख दिया करते थे! कुछ दिन बाद वोह कुत्ता मर गया तो हज़रत के हुक्म के मुताबिक़ उसे दफ़ना दिया गया!

इसी तरह एक रोज़ की बात है कि आसमान में एक बाज़ एक कमज़ोर चिड़िया का पीछा कर रहा था! इतने में हज़रत की निगाह उस चिड़िया पर पड़ी! फिर तो उस चिड़िया में इतनी ताक़त आ गयी कि उसने पीछे मुड़कर उस बाज़ का शिकार किया और उसे हज़रत के क़दमों में ला फेंका!

इसी तरह आपके लाताएदाद वाक़ेआत हैं! कहाँ तक ये फ़कीर तज़किरह इसका इस अदना किताब में दर्ज करे! बस हज़रत शैख

नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह फ़र्द ज़माना, तस्सवुफ़ व तरीक़त में यागाना रोज़गार थें! आप की ख़वारिक कश्फ़ व करामात तमाम आलम में मशहूर थी!

* सिलसिला-ए-इमामिया सोहरवर्दिया:-

आप की निज़बते रूहानी हज़रत शैख़ अम्मार यासिर रहमतुल्लाह अलैह के तोस्त से आईम्मा-ए-सादात तक इस तरह से पहुँचती है-

- * हज़रत शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत शैख़ अम्मार यासिर रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत शैख़ ज़ियाउद्दीन अबुनजीब सोहरवर्दि रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत शैख़ अहमद ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत शैख़ अबु-बक्र नस्साज रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत शैख़ अबुल कासिम गुरगानी रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत शैख़ अबु अली कातिब रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत शैख़ अली रोदबारी रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत शैख़ अबुल कासिम कुशेरी रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत शैख़ अबु अली दक्रा रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत शैख़ अबुल कासिम नसीराबादी बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत शैख़ अबुबक्र शिबली रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत शैख़ जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत शैख़ सिरि सोखती रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत शैख़ मअरूफ़ करखी रहमतुल्लाह अलैह
- * हज़रत सैय्यदना इमाम अली रज़ा अलैहिस्सलाम
- * हज़रत सैय्यदना इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम
- * हज़रत सैय्यदना इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम
- * हज़रत सैय्यदना इमाम मुहम्मद बाक़र अलैहिस्सलाम
- * हज़रत सैय्यदना इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम

- * हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम
- * हज़रत सैय्यदना इमाम हसन अलैहिस्सलाम
- * हज़रत सैय्यदना इमाम अली अलैहिस्सलाम
- * हज़रत सैय्यदना व मौलाना मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम-

* आपकी शहादत व मज़ार मुबारक:-

आपकी शहादत १० (10) जमादिउल अव्वल ६१८ (618) हिजरी में चंगेज़ खान तातारी के लशकर से मुकाबला करते हुए हुई! मशहूर है कि शहादत के वक़्त एक तातारी का बाल आपके हाथ में आ गया था! आपने बाल इतनी ज़ोर से पकड़ रखा था कि कोई शख्स उसे छुड़ा न सका बिलआख़िर उसे काट कर छुड़ाया गया!

* आप का मज़ार मुबारक तुर्कमानिस्तान के शहर कोनिया उरगेन्च के एक कस्बा ख़वारिज़म में मर्जे ख़लायक ख़ासो आम है!

* आपके ख़ुलेफ़ाकिराम और उनसे जारी होने वाले दीगर सलासिल-ए-उज़मा:-

यूँ तो लाखों लोग आपके निगाहें कीमिया असर से दरजा-ए-कमाल को पहुँचे हैं क्योंकि आपने मुमालिकते इस्लामिया के कई मुल्कों की सैर की है और हर जगह रुशदो इरशाद की दरिया बहाई जैसे- मिस्र, शाम, ईरान, इराक़! लेकिन बाज़ ख़ुलफ़ाकिराम ऐसे भी हैं कि जिन के वजूद नूर से रूहानी दुनिया के आफ़ताब व माहताब रौशन व ताबाँ हैं! जैसे-

(१) हज़रत शैख़ सआदउद्दीन हमवोई:-

जिन्हें मुहम्मद बिन अल मोएद बिन अबि बक्र बिन अबुल हुसैन

बिन मुहम्मद बिन अल शैख इस्माईल अब्दा अंसारी कहते हैं! सन् विलादत ५७२ (562) हिजरी और विसाल ६२४ (625) हिजरी है! आप का मज़ार मुबारक बहराबाद खुरासान में है! आप मक़ामे फ़र्दानियत पर फ़ाएज़ साहिबे इल्म ज़ाहिर व बातिन थे! आपकी कई तस्नीफ़ात मशहूर व मअरूफ़ हैं जैसे- सुजंजुल अरवाह व नक़्शुल अरवाह, सकीनतुस्सालेहीन, क़ल्ब अनमुनक़ल्ब, महबूब अलमुहिब्बीन व मतलूबउल वासलीन, अल मिस्बाह फि तस्सवुफ़ और कश्फ़उल महजूब वग़ैरह! आप से सिलसिला फ़िरदौसिया का कुबराविया हमवोईया सिलसिला आगे बढ़ा!

(२) हज़रत शैख रज़िउद्दीन अली लाला ग़ज़नवी:-
आप का नाम अली, लक़ब रज़िउद्दीन, उर्फ़ लाला और वालिद का नाम सईद जुवैनी था! आपकी सन् विलादत ५५५ (555) हिजरी और विसाल ६४२ (642) हिजरी है! आप को "लाला" कहा जाने की वजह ये है कि आप अफ़ग़ानिस्तान के रहने वाले थे और लाला अफ़ग़ानी ज़बान में बिरादर बुज़ुर्ग को कहा जाता है! आप अपने वक़्त के कुतुबुल मदार थे! आप शैख मुजद्दिदुद्दीन बग़दादी और शैख नज्मउद्दीन कुबरा के मुरीद थे! आप बहुत बड़े शायर और नश्र निगार भी थे! आप बहुत बड़े वसीह उल मशरब शैख़ थे! लगभग एक सौ तेरह अहले फ़ज़ल व कमाल से मुलाक़ात की और उन से रूहानी फ़ैज़ और कमालात और ख़िरकह हासिल किए! आप का मज़ार नवाह ग़ज़नी में दशत लाला से मौसूम है! हज़रत शैख रज़िउद्दीन अली लाला ग़ज़नवी से आगे चलकर हज़रत शैख अलाउद्दौला सिमनानी से होते हुए सिलसिला कुबराविया फ़िरदौसी की दो मशहूर शाखे हुईं एक सिलसिला-ए-हमदानिया जो हज़रत अमीर कबीर मीर सैय्यद अली हमदानी से चला और दूसरा सिलसिला नूर-बख़्शिया है जो हज़रत मीर सैय्यद नूर बख़्श से चला! और हज़रत मख़दूम अशरफ़ सिमनानी पर ये दोनों शजरह यकजा होकर अशरफ़ी कहलाया!

(३) हज़रत शैख मुजद्दिदउद्दीन अहमद बग़दादी:-

आप का नाम मुजद्दिदउद्दीन कुन्नियत अबु सईद लक़ब अबुल फ़तह और वालिद का नाम मोईद बग़दादी है! आपकी विलादत सन् ५५४ (554) हिजरी में बग़दाद में हुई! आपके वालिद और वालिदा अपने वक़्त के कामिल लोग थें और मशहूर तबीबों में शामिल होते थें! आपकी इब्तेदाई तालीमों तरबियत अपने वालिदैन के ज़ेरे साया हुई! फिर बग़दाद के साहिबाने इल्म से तालीम हासिल किया और ख़िरका ख़लाफ़त हज़रत शैख नज्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह से हासिल किया! आप अपने वक़्त के कामिल औलिया अल्लाह से थें! आपकी शहादत सन् ६०७ (607) हिजरी में हुई और आपका मज़ार मुबारक हज़रत शैख नज्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह के ख़तीरे में है!

(४) हज़रत शैख बाबा कमालउद्दीन जुन्दी:-

आप का पूरा नाम कमालउद्दीन मसूद जुन्दी था! आपको बाबा कमाल जुन्दी भी कहा जाता है! आपकी विलादत ख़ुजन्द मावरुन्नहर में हुई! हालते शबाब में हज की अदायगी के बाद आप तबरेज़ में मुक़ीम हुए जहां का बादशाह सुल्तान हुसैन जलायर आप का मोतकिद था! आप साहिबे दीवान शायर और कामिल औलिया अल्लाह से थें! हज़रत शम्स तबरेज़ रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत फ़ख़रउद्दीन ईराक़ी रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत मौलाना अहमद आपके मुरीदों में से थें! आप का विसाल तबरेज़ में हुआ और वहीं आपकी मज़ार मुबारक मर्ज ख़लायक ख़ासो आम है! आपसे सिलसिला फ़िरदौसिया का कुबराविया जुन्दिया सिलसिला आगे बढ़ा!

(५) हज़रत शैख सैफ़उद्दीन अबुल मआली बाख़रज़ी:- आप की विलादत

५८६ (586) हिजरी में "बाखरज़" नेशापुर में हुई! आप शैख-ए-आलम, मोहम्मद और आरिफ़ कामिल थें! आप ख्वाजा फ़तेहाबादी से भी जाने जाते हैं! आपने कई साहेबान इल्म से तालीम हासिल किया जैसे शैख ताजउद्दीन महमूद आशानी, शम्सुल उलेमा कुर्दी, शैख जमालुद्दीन अहमद महमूदी बुखारी, शैख रशीदउद्दीन यूसुफ़ फ़िदी, शैख शहाबउद्दीन उमर सोहरवर्दि और ख़िरका ख़िलाफ़त हज़रत शैख नज़्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह से हासिल किया जिन्होंने आपको ख़िदमते खल्क के लिए बुखारा रवाना किया और जहाँ आपने कुबराविया सिलसिला खूब फैलाया! आप के खुलफ़ाकिराम में शैख बद्रउद्दीन समरकन्दी रहमतुल्लाह अलैह से सिलसिला फ़िरदौसिया का फ़रोग़ दिल्ली में हुआ और उनके बाद उनके मुरीद शैख रुक्नउद्दीन फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह ने इस सिलसिले को आगे बढ़ाया! हज़रत शैख सैफ़उद्दीन बाखरज़ी का विसाल २५ (25) ज़िक्कआद ६५९ (659) हिजरी में हुआ और आपका मज़ार मुबारक फ़तेहाबाद बुखारा में मर्ज ख़लायक ख़ासो आम है! आप से सिलसिला फ़िरदौसिया का कुबराविया बाखरज़िया सिलसिला आगे बढ़ा!

(६) हज़रत शैख नज़्मउद्दीन अब्दुल्लाह राज़ी:-
आपका पूरा नाम अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन शाहावर बिन असदी अल राज़ी है! आपको नज़्मउद्दीन दाई से भी जाना जाता है! आपकी विलादत सन् ५७३ (573) हिजरी में मुल्क रे में हुई! आप आरिफ़े रब्बानी और आलमे इस्लाम में तस्सवुफ़ की बाअसर शख़्सियतों में से एक हैं! आपकी तस्नीफ़ात में से "मिरसादुलइबाद" काफ़ी मशहूर है! आपका विसाल सन् ६४५ (645) हिजरी में हुआ और आपका मज़ार मुबारक बुखारा में मर्ज ख़लायक ख़ासो-आम है!

(७) हज़रत शैख मौलाना बहाउद्दीन वलद :-

आपका पूरा नाम बहाउद्दीन वलद मुहम्मद इब्न हुसैन खतीबी और लक़ब सुल्तानउल उलेमा है! आपकी विलादत ५४६ (546) हिजरी में बल्ख (खुरासान) में हुई! आप हज़रत मौलाना जलालुद्दीन रूमी रहमतउल्लाह अलैह के वालिदे मोहतरम और हज़रत हुसैन बिन अहमद खतीबी के फ़रज़न्द हैं! आप का खानदान अपने इल्म हिल्म व बुज़ुर्गी में मशहूर व मारूफ़ था! आप अपने बाप दादा के नक्श क़दम पर चलते हुए मुफ़्तीए आज़म हुए! आप कई शहरों की खानकाह में दर्स व तदरीस के लिए तशरीफ़ ले जाया करते थे! आख़िर में आपके खानदान ने अनातोलिया में क़याम किया फिर वहां से कूच मक़ाम कर के आप कोनिया आबाद हुए और जहाँ एक खानकाह क़ायम करके आपने मस्नदे सुलूको इरशाद को आरास्ता किया! आप का विसाल सन् ६२७ (627) हिजरी में कोनिया में हुआ और वहीं आप का मज़ार मुबारक मर्ज ख़लायक ख़ासो आम है!

(८) हज़रत शैख़ ऐनुल ज़मान जमालउद्दीन गेली:-

आप भी शायर बेमिस्ल ज़ाहिदे ज़माँ और शैख़ दौरां थे! एक रोज़ जब आपने ये इरादा किया कि शैख़ की ख़िदमत में हाज़री दी जाए तो कुतुबख़ाने में जाकर अक़ली व नक़ली की लताएफ़ में से एक मजमुआ को रास्ते के लिए इंतेखाब किया, कि जो रास्ते में उनका मोनिसे सफ़र हो सके! जब आप ख़वारिज़म के पास पहुंचे तो रात हो गई! उस रात ख़्वाब में आप देखते क्या हैं कि शैख़ नज़्मउद्दीन कुबरा फ़रमाते हैं कि "ऐ जमालउद्दीन अपनी गठरी को फेंक कर आ"! आप ख़्वाब से बेदार हो कर ये सोचने लगे कि ये गठरी है क्या? मेरे पास तो कुछ भी नहीं है! लेकिन दूसरे और तीसरे रात भी आपने वही ख़्वाब देखा! तीसरे रात शैख़ से आपने पूछ हि लिया कि आख़िर गठरी है क्या? शैख़ ने फ़रमाया वो मजमुआ जो तुमने जमा कर रखा है! आप सुबह जब बेदार हुए तो वो मजमुआ आपने दरिया में फेंक दिया! उसके बाद आप शैख़ के हुज़ूर हाज़िरे ख़िदमत हुए तो शैख़ ने फ़रमाया कि अगर वो मजमुआ तुम ना फ़ेकते तो तुम्हें कुछ फ़ायदा न होता! फिर शैख़ ने आपसे चिल्ला पूरा

करवाया और खिरका खलाफ़त अता करके "ऐनुलज़माँ" के लक़ब से सरफ़राज़ फ़रमाया! आप ख़्वारिज़्म से काज़िवन को तशरीफ़ ले गए जहाँ का सुल्तान अलाउद्दीन मुहम्मद बिन हसन आपकी हु़रमत व तौक़ीर बजा लाया! आपका विसाल सन् ६५१ (651) हिजरी में हुआ और काज़िवन में आपका मज़ार मुबारक मर्ज ख़लायक ख़ासो आम है! आप से सिलसिला फ़िरदौसिया का कुबराविया ज़ाहिदिया सियाहपोश सिलसिला आगे बढ़ा!

(९) हज़रत इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी:-

आपका पूरा नाम अबु अब्दुल्लाह मुहम्मद फ़ख़रुद्दीन अल राज़ी अल शाफ़ई है! आपकी विलादत सन् ५४४ (544) हिजरी में मुल्क रे में हुई! आपके वालिद माजिद शैख़ ज़ियाउद्दीन उमर इब्न अबुल क़ासिम सुलेमान इब्न नासिर अंसारी है! आप शैख़ कामिल और मुजद्दिद आज़म थे! आप ख़्वारिज़्म में शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत से होते हुए बुख़ारा समरक़न्द पहुँचे और ११९० (1190) ईस्वी में ग़ज़नी और फिर वहाँ से पंजाब आएँ! आख़िर में आपने हेरात में मुस्तक़िल क़याम किया और वहाँ एक मदरसे में शैख़ुल इस्लाम की हैसियत से दर्स व तदरीस में मसरूफ़ हुए! मुफ़ातेहुल ग़ैब (तफ़्सीर कबीर) आप की मशहूर तसनीफ़ है! सुल्तान अलाउद्दीन मुहम्मद ख़्वारिज़्म शाह आपके अक़ीदतमंदों में था! सन् ६०६ (606) हिजरी में कुछ हासिदों के ज़हर देने के सबब हेरात में आपका विसाल हो गया और वहीं आपका मज़ार मुबारक मर्ज ख़लायक ख़ासो आम है!

(१०) हज़रत शैख़ कुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी अल क़ड़वी:-

आप का नाम मुहम्मद, अमीरे कबीर और कुतुबउद्दीन आपके अलक़ाब और कुन्नियत अबुल हसन है! आपके सन् विलादत के मुताल्लिक अलग अलग क़ौल पाए जाते हैं! लेकिन सही ये है कि आपकी विलादत सन्

५५१ (551) हिजरी में मदीना मुनव्वरा में हुई!

आपके वालिद माजिद शैखुल आलम इमामुल आईम्मा व असफ़िया हज़रत सैय्यद रशीदउद्दीन अहमद अल मदनी अल ग़ज़नवी रहमतुल्लाह अलैह हैं जो अपने इल्मी हल्का के साथ सरज़मीने मदीना से बग़दाद तशरीफ़ लाएं! उस वक़्त बग़दाद में शैख मोहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर गिलानी रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात मर्ज ख़लायक बनी हुई थी! जिस वक़्त हुज़ूर ग़ौसे आज़म को शैख अहमद मदनी के आमद की ख़बर मिली उस वक़्त अपनी ख़ानकाह से निकल कर आपका ख़ैर मख़दम किया और आपको अपनी ख़ानकाह में ठहराया! हज़रत शैख रशीदउद्दीन अहमद मदनी और हज़रत शैख मोहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर गिलानी सादात हसनी और औलाद अब्दुल्लाह अल महज़ हसनी हुसैनी अलैहिस्सलाम से हैं! हज़रत शैख मोहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर गिलानी ने अपनी बड़ी हमशीरह बीबी उम्मे ज़ैनब को हज़रत शैख रशीदउद्दीन अहमद मदनी की ज़ौजियत में दे दिया जिन के बत्न से हज़रत शैख कुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी पैदा हुए! चुनौनचे हज़रत शैख कुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी की परवरिश इन्हीं जलीलुल कद्र उलेमा व औलिया के आगोशे रहमत व शफ़क़त में परवान चढ़ी और अवाएल में तालीमों तरबियत भी अपने वालिद शैख रशीदउद्दीन अहमद अल मदनी और अपने मामू शैख मोहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर गिलानी से पाई और इनके विसाल के बाद शैख ज़ियाउद्दीन अबुनजीब सोहरवर्दि के सामने ज़ानु-ए-तलम्मुज़ हुए लेकिन मुकम्मल तसकीन हज़रत शैख नज़्मउद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह से हासिल हुई और कुबराविया फ़िरदौसिया रंग आप पर ग़ालिब रहा चुनौनचे हज़रत शैख नज़्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी रहमतुल्लाह अलैह ने आपको ख़िरका व ख़लाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया!

हज़रत शैख कुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी रहमतुल्लाह अलैह वस्ल के इमाम, मक्रामे समदियत और सिद्दीक्रियत पर फ़ाएज़ ऐसे मक्रबूल बारगाहे इलाही बुज़ुर्ग हैं कि ज़ाहिर और पोशीदा तामाम औलिया आपके हुज़ूर सरे ख़म तसलीम रखते हैं! आपको आपके वालिद

हज़रत शैख रशीदउद्दीन अहमद मदनी और आपके मामू हज़रत शैख मोहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर गिलानी से आबाई बैअत व ख़लाफ़त और सज्जादा हज़रत इमाम हसन असकरी अलैहिस्सलाम भी हासिल है! इन तमाम ऐज़ाज़ो इकराम के अलावा आप गाज़ी व फ़ातेह मारकाए हिंद भी हैं! आपको हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारगाह से फ़तेह व नुसरत, फ़रोग़ दीने हक़ और हिंदल वली होने की बशारत भी हासिल हुई! आपसे जारी होने वाला सिलसिला कुबराविया कबीरिया कुतबिया कहलाया और हिंद व सिंध में फैल गया लेकिन इस सिलसिले के मशाऐख़उज़ाम बेमिस्ल सिफ़ातों के हामिल होने के बावजूद अम्र मख़फ़ी के तहत पसे पर्दा रहें (इस मौज़ू पर मज़ीद मालूमात के लिए फ़कीर की तसनीफ़ "चिराग़ ख़िज़्र" का मुताला करें)!

जैसा कि ऊपर ज़िक्र हो चुका है कि हज़रत शैख़ कुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी रहमतुल्लाह अलैह को हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम के जानिब से हिंदुस्तान जाने का हुक्म और फ़तेह की बशारत मिली जिसके तहत आप मदीना मुनव्वरा से अपने तीनों शहजादों और तमाम मुरीदों के हमराह बग़दाद व ग़ज़नी होते हुए हिंदुस्तान तशरीफ़ लाएं और सरज़मीने दिल्ली पहुँचे जहाँ सुल्तान कुतुबउद्दीन ऐबक की हुकूमत थी जिसने आपकी आमद पर आपके हुरमत व तौक़ीर के खातिर आपकी राहों में अपनी पलकें बिछा दिया और आपके दस्त हक़ परस्त पर बैअत होकर आपके हल्का ए इरादत में शामिल हो गया! दिल्ली से होते हुए आप अपने फ़रज़न्दों व मुरीदों कि जिसमें कुतुबउद्दीन ऐबक भी शामिल था और उसके तमाम फौजी लशक़रों के साथ राजा जय चंद राठौर पर हमलावर हुए जिसकी हुकूमत हिन्दुस्तान के मरकज़ कन्नौज व कड़ा पर थी और जिसके हुकूमत की हद्द बनारस तक थी! लिहाज़ा आपने बशारते नबवी के तहत राजा जय चंद राठौर के तमाम छोटे बड़े हुकूमती इलाकों को फतेह करते हुए पाये तख़्त "कन्नौज" को भी फतेह कर लिया और फिर उसके दारूल सल्तनत (राजधानी) "कड़ा" पर हमलावर होकर उसे अपनी हुकूमत में शामिल करके परचम इस्लाम को बुलन्द किया और इस बशारते नबवी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम

को भी पूरा कर दिया "कि सरज़मीने हिंद पर इस्लाम का परचम मेरे फ़रज़न्द कुतुबउद्दीन के हाथों फैरेगा"!

हज़रत शैख़ कुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी रहमतुल्लाह अलैह ने सरज़मीने कड़ा में फ़रोग़ उलूम दीन के लिए हिंदुस्तान की सबसे पहली दर्सगाह व खानकाह की संग बुनियाद रखी जिससे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ये भी बशारत पूरी हुई "कि हिंदुस्तान में इस्लाम की इशाअत मेरे फ़रज़न्द कुतुबउद्दीन पर मुनहसिर है"!

हिंदल वली हज़रत शैख़ कुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी अल कड़वी रहमतुल्लाह अलैह और हिंदल वली शैख़ मोईनउद्दीन संजरी अजमेरी रहमतुल्लाह अलैह एक ही वक़्त में हिंदुस्तान तशरीफ़ लाने वाले, सरकार अलैहिस्सलाम से हिंदल वली की बशारत पाने वाले, शैख़ नज्मउद्दीन कुबरा फ़िरदौसी से फ़ैज़याफ़ता, हुज़ूर ग़ौसे आज़म के भांजे और आपस में ख़लेरे भाई लगते थे!

किताब "तबक़ात नासरी" में हैं कि हज़रत शैख़ कुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी अल कड़वी रहमतुल्लाह अलैह सुल्तान बहराम शाह बिन सुल्तान अलतमश के अहदे हुकूमत सन् ६३७ (637) हिजरी में देहली के शैख़ुल इस्लाम के मंसब पर फ़ाएज़ हुए और सुल्तान नासिरउद्दीन महमूद के अहदे हुकूमत सन् ६५३ (653) हिजरी में सुबुग़दोश हुए!

हज़रत शैख़ कुतुबउद्दीन मुहम्मद मदनी रहमतुल्लाह अलैह का विसाल सन् ६७७ (677) हिजरी में सर ज़मीने "कड़ा" पर हुआ और वहीं आपका मज़ार मुबारक मर्ज ख़लायक ख़ासो आम है!

आपसे सिलसिला फ़िरदौसिया का कुबराविया कबीरिया कुतबिया सिलसिला आगे बढ़ा!

Hazrat Shaikh Abul Jannaab Najm-ud-deen Ahmad al- Kubra rahmatullāhi
alaihi :



**Hazrat Shaikh Najm-ud-deen Ahmad al- Kubra
Rahmatullāhi alaihi
(Urgench / Turkmenistan)**



Alqaab :

Shaikh e Wali taraash (Sculptor of Saints), Taamatul kubra.

Aap ki wilaadat 540 Hijri (1145 A.D.) me Khwarazm (Turkmenistan) me hui.

Aap ke waalid ka naam Umar bin Muhammad hai.

Aap ne Qur'an aur Kalaam ki ta'aleem haasil ki.

Aap ne Iran aur phir Misr jaakar Hadees ki ta'aleem haasil ki.

Aap ne Hazrat Allama Abul Ma'ali Faraadi Nishapuri, Haafiz Abul Ula aur Imaam Abu Taahir Salfi Misri se ta'aleem haasil ki.

Ek arsa tak Aap ki dilchaspi Uloome zaahiri aur Dars o tadrees tak

mahdood thi. Ek martaba Aap Tabriz me muqem the tab Hazrat Muhiy-us-Sunnah Imaam Baghawi rahmatullāhi alaihi ke ek shaagird se Imaam Mausuf ki kitaab 'Sharhus Sunnah' padh rahe the ke ittefaaq se Hazrat Baaba Farj Tabrizi rahmatullāhi alaihi darsgaah ki taraf se nikle aur ek bharpur nigaah Aap par daali.

Us nigahe faiz ne Aap ke dil ka aalam badal diya. Aap Baaba Farj Tabrizi ki khaanqaah shareef me haazir hue aur Hazrat ki khidmat me Uloom baatini ki ta'aleem haasil ki. Harzat ne apna Khirqa mubarak pehnaaya. Phir Aap raahe Sulook par aage badhte rahe.

Misr (Egypt) me Aap ne Hazrat Baaba Farj Tabrizi rahmatullāhi alaihi, Hazrat Moeen-us-Sunnah Shaikh Ruzbihan Yamaan Kabeer al-Wazzan Suharwardi Misri rahmatullāhi alaihi, Hazrat Ismāeel al-Qasri rahmatullāhi alaihi aur Hazrat Ibrāheem Kurdi rahmatullāhi alaihi se Tasawwuf ki ta'aleem haasil ki.

Phir Hazrat Ismāeel al-Qasri ke rahmatullāhi alaihi mashware par Hazrat Shaikh Zia-ud-deen Ammaar bin Yaasir al-Bitlisi rahmatullāhi alaihi ke mureed hue aur apne peer ke wisaal ke baad Aap Misr waapas aaye.

Aap ne Hazrat Ghaus aazam Shaikh Sayyed Abdul Qadir Jeelaani radiy-Allāhu ta'ala anhu aur Hazrat Shaikh Zia-ud-deen Abul Najeeb Suharwardi rahmatullāhi alaihi se bhi faiz haasil kiya.

Shaikh Ruzbihan al-Misri ke mashware par Aap ne nikaah kiya.

Aap ke saahabzaade Hazrat Baaba Mufrah rahmatullāhi alaihi hain.

Phir 582 Hijri (1185 A.D.) me Khwarazm waapas aaye aur ta'aleem e deen karte rahe.

Tasannif :

Aap ki mash'hoor kitaaben :

- (1) Fawaatih-ul-Jamaal wa fawaatih-ul-Jalaal
- (2) Usool-ul-Ashrah
- (3) Risaalat al-kha'if al-ha'im min lawmaat al-la'im.
- (4) Fi Adab al-saalikeen
- (5) Taweelaat-ul-Najmiyah
- (6) Adab al-suluk ila Hazrat Malik-ul-Mulook.

Aap ne apne shaagirdo ko bhi apni ta'aleem aur faiz se aala darje ke Wali e kaamil banaaye. Is liye Aap ka laqab 'Shaikh e Wali taraash (Sculptor of Saints)' hai.

Ek martaba ek Saudagar Aap ki khaanqaah shareef me haazir hua. Aap par us waqt khushi kaifiyat taari thi. Aap ne us Saudagar par ek nigaah kimiya asar daali aur martaba e Wilaayat ataa farma kar puchha ke 'Kis mulk se aaye ho?' Us ne mulk ka naam bataaya. Aap ne use Ijaazat naama likh kar diya aur farmaaya ke "Jaao! tumhe us mulk ka Qutbul irshaad muqarrar kiya."

Karaamat :

- (1) Ek din Aap apne saathiyo ke saath baithe hue the. Ek baaz hawa me ek faakhta ka pichha kar raha tha. Achaanak Hazrat ki nazar us faakhta par padi. Foran faakhta pichhe palti aur baaz ko pakad kar Aap ke qadmo me la phenka.

(2) Ek din Aap ki majlis me Ashaabe Kahaf ke baare me guftagu ho rahi thi. Aap ke ek mureed ke dil me khayaal paida hua ke Ummate Muhamamdi me bhi koi aisa shakhs hai jis ki sohbat se Kutta faizyaab ho jaaye?

Aap ne us mureed ke dil ki baat ma'aloom kar li aur Khaanqaah ke darwaaze par jaa kar khade ho gaye. Waha se ek Kutta guzra. Aap ne us Kutte par nazar daali to wo usi waqt mutahayyar wa bekhud ho gaya aur Shaher se baahar qabrastan me jaa kar muqem ho gaya aur wo apna sar hamesha zameen par ragadta rehta tha.

Wo Kutta jaha jaata 50-60 kutte us ke aas paas jama hokar halqa bana lete aur Adab o ehtaraam ke saath us ke saamne khade rehte.

Kuchh arse baad us kutte ka inteqaal hua to Hazrat ne farmaaya ke 'Is ko dafn kar do.'

Aap Hazrat Shaikh Zia-ud-deen Ammaar bin Yaasir al-Bitlisi rahmatullāhi alaihi ke mureed aur Khalifa hain.

Aap ko Hazrat Ismāeel al-Qasri rahmatullāhi alaihi se bhi (Kumailiya silsila) ki khilaafat mili hai.

Aap se 'Suharwardi Kubrawiya' silsila jaari hai.

Aap ke khulfa :

- (1) Shaikh Sa'ad-ud-deen Mohammad Hamuwayi rahmatullāhi alaihi,
- (2) Shaikh Razi-ud-deen Ali ibn Laala Ghaznawi rahmatullāhi alaihi,
- (3) Shaikh Majd-ud-deen Ahmad Baghdadi rahmatullāhi alaihi,
- (4) Shaikh Najm-ud-deen Abdullāh Razi rahmatullāhi alaihi,
- (5) Shaikh Saif-ud-deen Abul Ma'ali Sa'ad Bakharzi rahmatullāhi alaihi,
- (6) Shaikh Baha-ud-deen Walad ibn Husain rahmatullāhi alaihi,
- (7) Shaikh Baaba Kamaal Khanjari Jundi rahmatullāhi alaihi,
- (8) Shaikh Ain-ul-zamaan Jamaal-ud-deen Gili rahmatullāhi alaihi,
- (9) Shaikh Mas'ood-ud-deen Hamawi rahmatullāhi alaihi.

618 Hirji (1221 A.D.) me Mongol (Taataari) lashkar ne Khwarazm par hamla kiya tab Aap Islaam aur watan ki hifaazat ke liye jung ke liye tayyaar hue. Mongol lashkar ne Aap se kaha ke agar aap jung karne ke liye na aaye to wo aap ko chhod denge. Magar Aap na maane aur bahaaduri se jung karte hue shaheed ho gaye.

Aap ka wisaal 10 Jamaadi ul awwal 618 Hirji (1221 A.D.) ko hua.

Aap ka mazaar Urgench, Khwarazm (Turkmenistan) me hai.

ALLĀH ta'ala us ke Habeeb sallallāhu alaihi wa sallam ke sadqe me Aur Hazrat Shaikh Najm-ud-deen Ahmad al- Kubra rahmatullāhi alaihi aur tamaam Auliya Allāh aur ke waseele se Sab ko mukammal ishq e Rasool ata farmae aur Sab ke Eimaan ki hifaazat farmae aur Sab ko nek amal karne ki taufiq ata farmae. Aur Sab ko dunya wa aakhirat me kaamyaabi ata farmae aur Sab ki nek jaa'iz muraado ko puri farmae. Aameen.

Born in 540/1145 in Konye-Urgench, Najmuddin Kubra began his career as a scholar of hadith and kalam. His interest in Sufism began in Egypt where he became a murid of Ruzbihan Baqli, who was an initiate of the Uwaisi.

After years of study, he abandoned his exploration of the religious sciences and devoted himself entirely to the Sufi way of life.

Sufi sheikh Zia al-Din-'Ammar Bitlisi was Kubra's teacher, who tried to present Sufi thought in a new way to provide contemplation and influence for the reader. After receiving his khirka, Kubra gained a large following of gnostics and writers on Sufism.

Because his followers were predominantly Sufi writers and gnostics, Kubra was given the title "manufacturer of saints" (in Persian: vali tarash) and his order was named the Kubrawiya.[4]

Kubra's main body of works concerns the analysis of the visionary experience. He wrote numerous important works discussing the visionary experience, including a Sufi commentary on the Quran that he was unable to complete due to his death in 618/1221. Kubra died during the Mongol invasion and genocide after refusing to leave his city, where he fought in hand-to-hand combat against the Mongols.

Overall, Kubra is remembered as a pioneer of the Sufi tradition and explanation of spiritual visionary experiences. Kubra's work spread throughout the Middle East and Central Asia where it flourished for many years, until it gradually was taken over by other similar more popular ideologies and Sufi leaders.

Location

The Najm al-Din Kubra mausoleum is located in the centre of Kunya Urgench, just south of the Khan-yab canal. It is built in a pretty little walled courtyard with spreading trees located in the centre of a large open area just west of the Dash mosque and medresseh, which today houses a small local museum. The courtyard also contains the mausoleum of Sultan Ali.

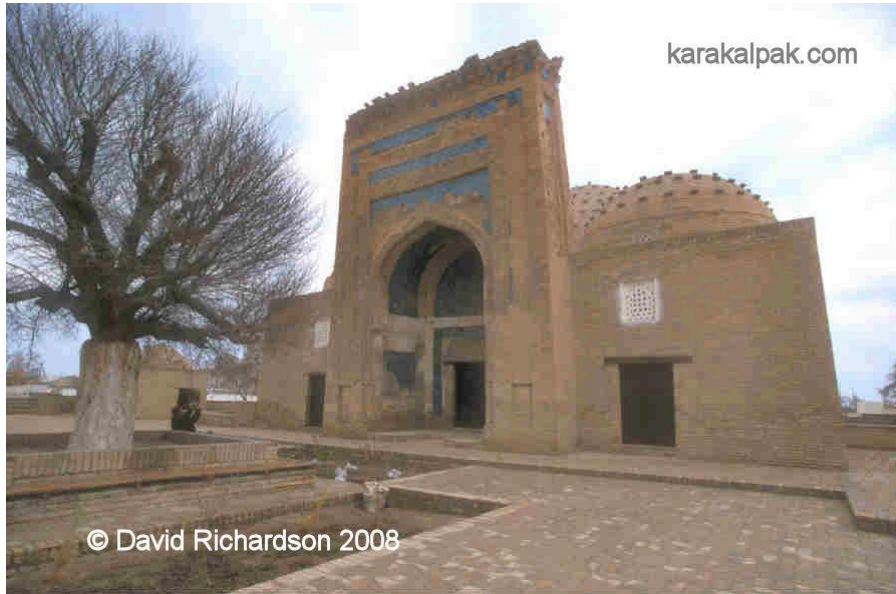


Satellite image of the Dash mosque and medresseh on the right and the walled courtyard on the left.

The Najm al-Din Kubra mausoleum lies to the south of the smaller Sultan Ali mausoleum. Image courtesy of Google Earth.

Najm ad-Din Kubra mausoleum

The mausoleum of Najm ad-Din Kubra is oriented north-south with its entrance on the northern side. The building is dominated by a 12 metre high portal or *pishtaq*, whose doors open into a small twin-domed entry vestibule, flanked on each side with square rooms. The latter have a single domed ceiling and their own separate entry doors on each side of the central portal. The entry vestibule leads into the main burial chamber, which has squinches in each of the four upper corners and is roofed with a large open octagonal drum. The walls are decorated with large arched niches. The whole interior is illuminated by small screened windows set in the walls as well as in the domes of the roof.



The Najm al-Din mausoleum. Note the restored roof domes and two side rooms.

The burial chamber contains the rectangular double sarcophagus of Najm al-Din Kubra in its north-western corner, next to a smaller rectangular shrine. Legend has it that Kubra was beheaded by the Mongols during the conquest of Gurganj and that one sarcophagus contains his body and the other his head. From the evidence of old photographs it seems that the sarcophagus was originally covered with blue glazed tiles and inscriptions. Today all that remains are the words *El Mulku-lillah* meaning “all things are God’s”.



The Najm al-Din mausoleum, facing the Sultan Ali mausoleum.

There are similarities to the mausoleum of the Nakshbandi Sufi *khoja* Sayid 'Ala ad-Din at nearby Khiva. His tomb, which was built around 1340 and restored in the 1990s, is decorated with blue, green and turquoise majolica tiles. It is one of the oldest buildings in the Ichan *qala*.

karakalpak.com

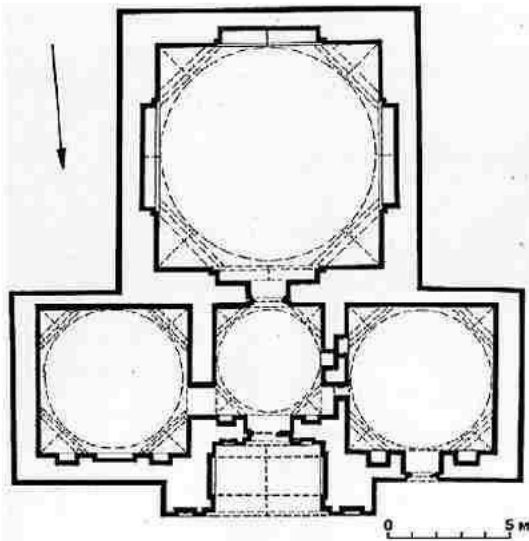
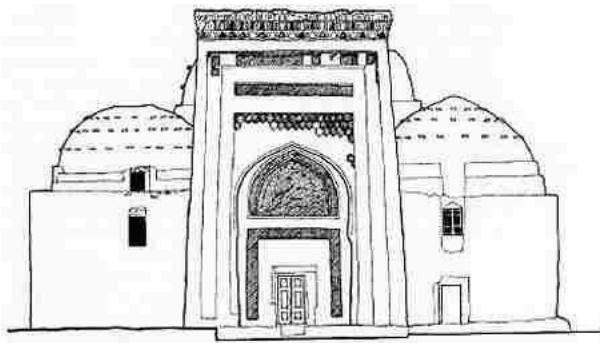


© David Richardson 2008



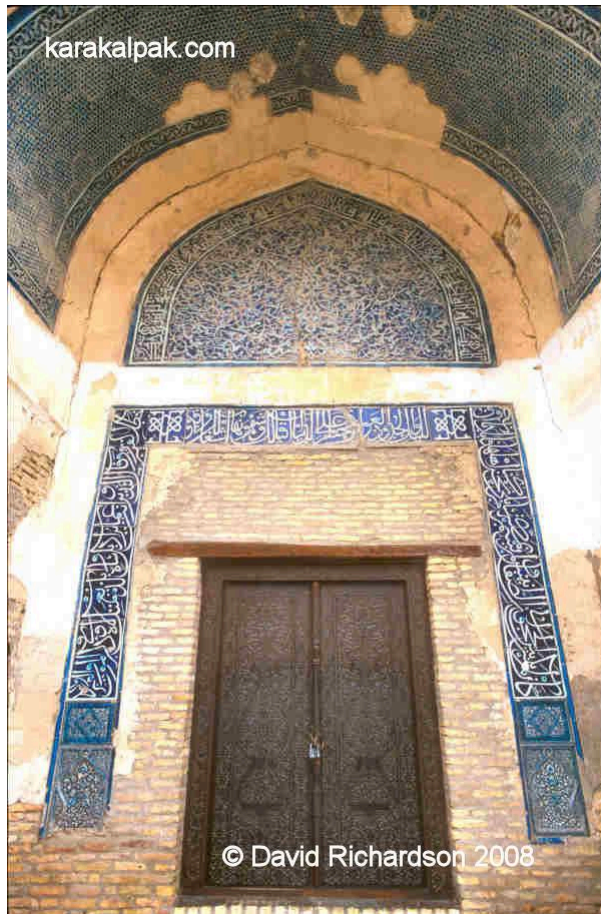
The tiled portal of the Najm al-Din Kubra mausoleum.

The Najm ad-Din Kubra mausoleum was constructed from thin yellow fired bricks and the domed roofs are rounded on the outside. The portal is in a bad state of disrepair, with much of the brickwork covered in cracked cement render. Apparently the monument was partly restored in 1950 following the collapse of the central dome. Much of the original blue glazed tile work on the portal is missing. The two rows of tiles decorated with Kufic script along the top of the portal apparently praise Qutlugh Timur, the governor of Golden Horde Khorezm from 1321 to 1333, who patronized the building of the mausoleum. The facing of the portal around the arched entrance was once covered with simple hexagonal tiles, only the top rows of which remain. The best preserved tile work is over and around the replica wooden entrance door. The original doors are kept inside the mausoleum.



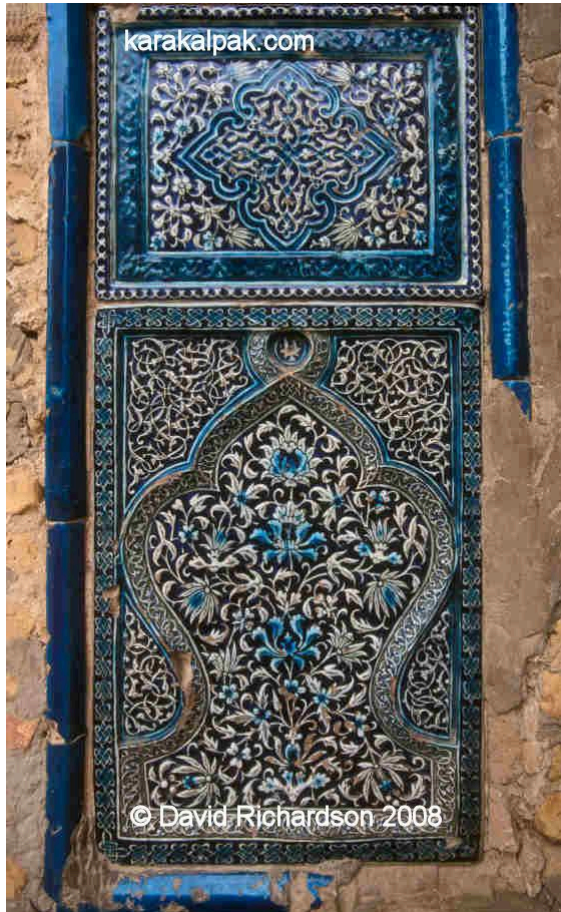
Drawing of the Najm al-Din mausoleum by I. I. Notkin, 1959.

Najm al-din Kubra was born in Khiva in 1145, when the Qipchaq armies of Khorezm ruled over a large part of western Central Asia. After his basic education in Islam he moved to Dizful in western Persia to continue his religious studies. After the death of his second teacher he moved to Egypt to continue his education and to become a religious teacher. During his stay he married the daughter of his own religious instructor. He seems to have returned to Khorezm at some time between 1185 and 1190, establishing his own school of Sufi mysticism, which became known as the Kubra order.



Decorative tilework around the main door.

Najm ad-Din Kubra helped Khorezm become one of the major centres of Sufism during the 12th to the 14th centuries. Sufism is a mystical, spiritual and emotional branch of Islam, which aims for its adherents to reach God through personal meditation and secret recitation. The Sufi movement originally developed in Iraq and Syria in the early 9th century before spreading into western Central Asia. The movement's name derives from *suf*, meaning wool, since the Sufis wore simple cloaks made from coarse wool. Najm ad-Din Kubra taught his pupils that they must become more Godly by personally undertaking a series of ascetic practices involving fasting, prayer and silent meditation under the supervision of a master. In time the pupil would progress from one spiritual stage to another, each symbolized by different colours; black corresponded to the lowest stage and green to the highest.



Glazed tilework panel on the side of the entrance doorway.

Najm al-Din Kubra wrote extensively and seven of his books and 24 of his poems survive to this day. His most important book was *Fawatih al-Jamal wa fawatih al-jalal*, or the “Aromas of Beauty and Preambles of Majesty”, where he recorded his own personal visionary experiences along with detailed guidance for students of his Sufi doctrine. In this book he described the details of the coloured lights and spots that appear when a novice undergoes spiritual training and how even the act of breathing expresses obedience to God, since the sound of exhalation and inhalation – “ha” – signifies *Allah*. His brand of Sufism, which became known as the Kubrawiyyah Order, was rapidly introduced to Persia, Afghanistan, India and China.

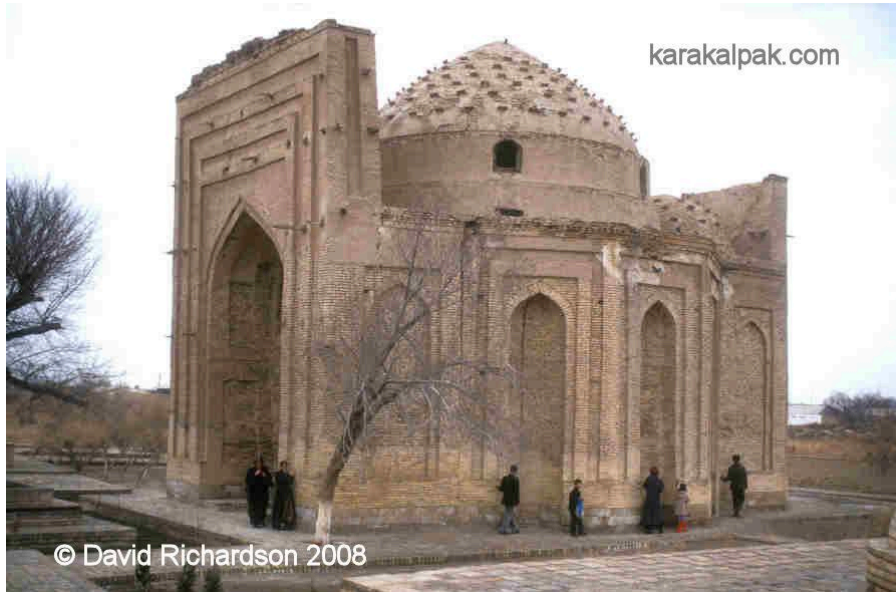
At the time of Chinggis Khan's invasion of Khorezm in 1221, Najm ad-Din Kubra was already 75 years old. Legend has it that the Mongols offered him the chance to surrender before the siege of Gurganj. He refused and fought alongside his fellow Khorezmians, only to be beheaded after its conquest.

His mausoleum was constructed over one hundred years later under the orders of Qutlugh Timur (a name meaning "blessed iron"), who had been appointed governor of Khorezm by Sultan Uzbek, the ruler of the Golden Horde. Qutlugh Timur happened to be the son of Uzbek's maternal aunt.

It is not clear whether the mausoleum truly does contain the remains of Najm ad-Din Kubra. Nevertheless it still remains the most holy place in the Kunya Urgench region and attracts many local pilgrims.

Sultan Ali mausoleum

Just opposite the Najm ad-Din Kubra mausoleum is a later 16th century mausoleum built for Ali Khan, who was commonly called Sultan Ali. He was the son of the Khorezmian ruler Avanesh Khan (1535-38) and was appointed governor of Urgench (Kunya Urgench, not modern day Urgench) by the later Aqatay Khan (1548-1556). Aqatay Khan was one of Avanesh Khan's younger brothers.



The Sultan Ali mausoleum.

Sultan Ali was visited by the English merchant Anthony Jenkinson when he travelled through Urgench in 1558. This was a time of an intense power struggle between the ruling families of Khorezm. Jenkinson noted that although one of them had the name of king or Khan:

” ... he is little obeyed saving in his own dominion, and where he dwelleth: for every one will be king of his own portion, and one brother will seeketh always to destroy another, having no natural love among them, by reason that they are begotten of divers women, and commonly they are the children of slaves, either Christian or Gentiles, which the father doeth keep as concubines, and every Khan and Sultan hath at least 4 or 5 wives, besides young maidens and boys, living most viciously ...”

Urgench was essentially in the middle of a civil war and Jenkinson observed that the town had been won and lost four times within the past seven years!

The Sultan Ali mausoleum was built in the 1580s. It is a miniature copy of the Tura beg Khanum mausoleum, located on the edge of the ruins of Urgench just south of Kunya Urgench. However unlike the original, the copy has been built in simple yellow fired brick and has no decorative tile work whatsoever. This lack of decoration was probably a sign of the times. All of Khorezm's master craftsmen had been long ago enslaved by Amir Timur and marched off to build the palaces, mosques and medressehs of Samarkand and Shahr-i Sabz.

Dash mosque and medressah

The Dash mosque and medresseh is just a minute's walk away from the mausoleums of Najm ad-Din Kubra and Sultan Ali. It was built in 1908 and consists of a number of domed cells with doors overlooking a courtyard.

Today it houses the local Kunya Urgench museum and is well worth a visit although there is a small admission charge. The museum contains various archaeological finds from the sites of Kunya Urgench, including some interesting examples of 12th century and Golden Horde tiles and ceramics and information on some of the monumental *qalas* in the surrounding region. Look out for the blue polished vase excavated from the Sultan Tekesh mausoleum that contained a horde of 500 silver coins.



The horde of silver coins.